

व्यक्तियों में रुचि से लेकर आबादी तक: प्रोफाइलिंग का औद्योगिकीकरण

“व्यक्तियों में रुचि” वाले लक्षित व्यक्तियों की मैनुअल जांच से लेकर पूरी आबादी की स्वचालित, निरंतर निगरानी तक प्रोफाइलिंग का उदय शक्ति के प्रयोग, प्रौद्योगिकी की भूमिका और व्यक्तिगत स्वायत्तता की सीमाओं में सबसे गहरे परिवर्तनों में से एक है। जिसके लिए पहले काफी मानवीय प्रयास, संस्थागत प्राथमिकता और जानबूझकर चयन की आवश्यकता होती थी, वह अब एक सहज बुनियादी ढांचा बन गया है जो रोजमर्रा की जिंदगी के आकस्मिक उप-उत्पाद के रूप में अरबों लोगों के व्यवहारिक डेटा को वास्तविक समय में उत्पन्न, एकत्र और विश्लेषित करता है।

यह परिवर्तन केवल प्रौद्योगिकी द्वारा पूर्वनिर्धारित नहीं था। यह नौकरशाही विस्तार, बार-बार सुरक्षा संकटों, डेटा मुद्दीकरण से जुड़े आर्थिक प्रोत्साहनों और डेटा संग्रह, भंडारण तथा अनुमान की सीमांत लागत में निरंतर कमी के अंतर्क्रिया से उभरा। परिणाम केवल “अधिक निगरानी” नहीं है, बल्कि एक गुणात्मक रूप से भिन्न व्यवस्था है: जो प्राकृतिक घर्षण को घर्षणरहित पैमाने से, मानवीय विवेक को एल्गोरिदमिक स्वचालन से और कुछ पर असाधारण संदेह को कई पर आधारभूत अवलोकन से बदल देती है।

इसके मूल में एक मौलिक रूपांतरण है: प्रोफाइलिंग **हस्तकला** — चयनात्मक, श्रम-केंद्रित और व्याख्यात्मक — से **औद्योगिक प्रक्रिया** — सार्वभौमिक, स्वचालित और भविष्यवाणीपूर्ण — में बदल गई है। निम्नलिखित इस परिवर्तन का अनुसरण करता है, उन क्षणों की पहचान करता है जहां बाधाएं कम हुईं और नई क्षमताएं निरंतर, आबादी-व्यापी अनुमान की व्यवस्था में ठोस रूप लेने लगीं।

I. आधार: चयनात्मक, मैनुअल अभ्यास के रूप में प्रोफाइलिंग

प्रोफाइलिंग, अपने सबसे बुनियादी रूप में, विशेषताओं का अनुमान लगाने, व्यवहार की भविष्यवाणी करने या जोखिम की श्रेणियां सौंपने के लिए सूचना के व्यवस्थित संग्रह और व्याख्या को शामिल करता है। इसकी उत्पत्ति प्राचीन काल में गहरी है।

प्राचीन साम्राज्यों ने केवल कराधान या भर्ती के लिए ही नहीं बल्कि वर्गीकरण के लिए भी जनगणना की। रोमन अधिकारी और चीनी साम्राज्यवादी प्रशासकों ने व्यवसाय, वफादारी और स्थिति के आधार पर आबादी को छांटा, जिससे प्रारंभिक संबंधात्मक मानचित्र तैयार हुए जो संभावित खतरों की पहचान कर सकते थे। धार्मिक संस्थाओं ने जन्म, विवाह, कबूलनामे और नैतिक आचरण के रिकॉर्ड रखे, जिससे प्रभाव और विचलन की नेटवर्क को प्रकट करने वाले प्रोटो-सोशल ग्राफ तैयार हुए।

फिर भी इन प्रणालियों में एक परिभाषित बाधा थी: **सूचना महंगी थी**। डेटा एकत्र करना, सत्यापित करना, संग्रहीत करना और व्याख्या करना काफी मानवीय श्रम की मांग करता था। परिणामस्वरूप, प्रोफाइलिंग **चयनात्मक, एपिसोडिक और सीमित** रही। यह कुल आबादी पर नहीं बल्कि अभिजात वर्ग, विरोधियों या रणनीतिक रूप से प्रासंगिक समूहों पर केंद्रित थी।

प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में भी, राज्यों द्वारा निगरानी तंत्र के विस्तार के बावजूद यह चयनात्मकता बनी रही। खुफिया प्रयासों ने विधर्मियों, राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों, तस्करों और विदेशी एजेंटों को मुखबिरों, रोके गए पत्राचार और शारीरिक निगरानी के माध्यम से लक्षित किया। फ्रांस और अन्य राज्यों के **कैबिनेट नोइर** (काले कक्ष) ने इस दृष्टिकोण का प्रतीक बनाया: क्लर्कों की टीमें पत्रों को मैनुअल रूप से खोलतीं, उनकी प्रतियां बनातीं और उन्हें डिलीवरी के लिए फिर से सील करतीं। ये संचालन स्वाभाविक रूप से सीमित थे। वे उच्च-मूल्य वाले लक्ष्यों पर केंद्रित थे क्योंकि इससे व्यापक कुछ भी लॉजिस्टिक रूप से असंभव था।

इस चरण में भी, **मेटाडेटा** की शक्ति को स्पष्ट रूप से समझा गया था। संचार के बारे में जानकारी — प्रेषक, प्राप्तकर्ता, समय और मार्ग — सामग्री तक पहुंच के बिना भी नेटवर्क और इरादों को उजागर कर सकती थी। 1844 की ब्रिटिश पोस्ट ऑफिस

जासूसी घोटाले ने इसे सार्वजनिक ध्यान में लाया। लंदन में निर्वासित इतालवी क्रांतिकारी ज्यूसेपे माजिनी को संदेह था कि विदेशी शक्तियों के अनुरोध पर प्राधिकारियों द्वारा उनके पत्र खोले जा रहे हैं। उन्होंने और उनके समर्थकों ने लिफाफों के अंदर पोस्ट के बीज और रेत के दाने डाल दिए थे; जब पत्र बिगड़े हुए पहुंचे, तो माजिनी ने रैडिकल सांसद थॉमस डंकॉम्ब को संसद में मुद्दा उठाने के लिए प्रेरित किया। परिणामी घोटाले ने गृह सचिव सर जेम्स ग्राहम द्वारा जारी वारंट के तहत व्यवस्थित पत्र खोलने को उजागर किया, जिसने आक्रोश, संसदीय जांच और अंततः पोस्ट ऑफिस के गुप्त विभाग के उन्मूलन को जन्म दिया। यह आधुनिक गोपनीयता संबंधी पहली घबराहटों में से एक था और इस बात पर जोर दिया कि संबंधात्मक डेटा अकेले भी संघों की नेटवर्क को कैसे तोड़ सकता है।

इसके जवाब में, “पत्राचार की गोपनीयता” (**Briefgeheimnis, secret de la correspondance**) जैसे कानूनी मानदंड उभरे। इन सिद्धांतों ने संचार डेटा के उपयोग को केवल डिलीवरी जैसे परिचालन उद्देश्यों तक सीमित कर दिया, निगरानी या प्रोफाइलिंग के लिए द्वितीयक शोषण पर प्रतिबंध लगा दिया। अंतर्निहित विचार सरल लेकिन गहरा था:

विशिष्ट कार्य के लिए उत्पन्न डेटा को व्यक्तियों या नेटवर्क के व्यापक प्रोफाइल बनाने के लिए पुनः उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

यह सिद्धांत सदियों तक गूंजता रहा — फिर भी प्रौद्योगिकी और संस्थागत दबाव के तहत अंततः क्षय हो गया।

II. नौकरशाही शताब्दी: स्वचालन के बिना विस्तार

20वीं शताब्दी ने प्रोफाइलिंग को नाटकीय रूप से विस्तारित किया जबकि इसके कई पूर्ववर्ती बाधाओं को बनाए रखा। कुल युद्ध की मांगों ने अभूतपूर्व सूचना संग्रह की आवश्यकता पैदा की। मेल सेंसरशिप, सिग्नल इंटेलिजेंस और कोड ब्रेकिंग ने निगरानी को अभिजात वर्ग से आगे व्यापक आबादी तक बढ़ा दिया। नेशनल सिक््योरिटी एजेंसी जैसी संस्थाओं ने बड़े पैमाने पर इंटरसेप्शन को संस्थागत रूप दिया, जबकि घरेलू एजेंसियों ने राजनीतिक समूहों, संदिग्ध कट्टरपंथियों और आपराधिक नेटवर्क पर व्यापक फाइलें तैयार कीं।

फिर भी प्रोफाइलिंग **मूल रूप से लक्षित** रही। वायरटैप विशिष्ट व्यक्तियों या लाइनों से जुड़े थे। खुफिया फाइलें मानवीय विश्लेषकों द्वारा तैयार की जाती थीं। मात्रा बढ़ने के बावजूद, **मानवीय ध्यान ही बोतलनेक** रहा।

प्रारंभिक कंप्यूटिंग सिस्टम (1950-1970) ने रिकॉर्ड-कीपिंग के पैमाने को बदलना शुरू कर दिया। सरकारों और निगमों ने कल्याण रोल, क्रेडिट इतिहास और आपराधिक डेटाबेस को डिजिटल बनाया, जिससे तेज पुनर्प्राप्ति और क्रॉस-रेफरेंसिंग सक्षम हुई। लेकिन ये सिस्टम अभी भी **अलग रिकॉर्ड** पर काम करते थे, न कि निरंतर व्यवहार प्रवाह पर।

1970 के दशक तक, केंद्रीकृत “डेटा बैंक” के बारे में चिंताओं ने कानूनी प्रतिक्रियाएं जन्म दीं। अमेरिका का प्राइवैसी एक्ट 1974 और यूरोपीय डेटा सुरक्षा कानूनों ने उद्देश्य सीमित करने, डेटा न्यूनीकरण और पारदर्शिता के सिद्धांत पेश किए। इन ढांचों ने पत्राचार गोपनीयता के तर्क को डिजिटल युग में विस्तारित किया।

हालांकि, वे एक महत्वपूर्ण धारणा पर आधारित थे: कि डेटा संग्रह **सीमित और एपिसोडिक** है। उन्होंने रिकॉर्ड को नियंत्रित किया — प्रवाह को नहीं। यह धारणा जल्द ही ढहने वाली थी।

III. मोड़ बिंदु: रिकॉर्ड से डेटा एग्जॉस्ट तक

निर्णायक ब्रेक 1990 के अंत और 2000 के शुरुआत में इंटरनेट के उदय के साथ होता है — न केवल संचार माध्यम के रूप में, बल्कि उस बुनियादी ढांचे के रूप में जो निरंतर डेटा उत्पन्न करता है।

डिजिटल सिस्टम **डेटा एग्जॉस्ट** उत्पन्न करते हैं: सामान्य गतिविधि के उप-उत्पाद के रूप में स्वचालित रूप से बनाई गई मेटाडेटा। हर कनेक्शन, क्वेरी, क्लिक और गति नगण्य लागत पर लॉग, संग्रहीत और विश्लेषित किए जा सकने वाले निशान पैदा करती है।

यह निर्णायक बदलाव दर्शाता है:

प्रोफाइलिंग डेटा पर किया जाने वाला एक गतिविधि होना बंद हो जाती है और निरंतर इसे उत्पन्न करने वाली बुनियादी ढांचा बन जाती है।

इंटरनेट सेवा प्रदाता कनेक्शन लॉग, DNS क्वेरी और रूटिंग जानकारी को कैप्चर करते हैं, जो सामग्री एक्सेस के बिना भी व्यवहार पैटर्न प्रकट करते हैं। डाक मेटाडेटा — क्षणिक और विकेंद्रीकृत — के विपरीत, डिजिटल मेटाडेटा स्थायी, केंद्रीकृत और तुच्छ रूप से खोजने योग्य है।

इस बुनियादी ढांचे के ऊपर, गूगल और मेटा जैसी प्लेटफॉर्म ने प्रोफाइलिंग को मुख्य आर्थिक मॉडल में बदल दिया। सर्च इंजन इरादे को कैप्चर करते हैं; सोशल नेटवर्क संबंधों को मैप करते हैं; मोबाइल इकोसिस्टम गति को ट्रैक करते हैं। एम्बेडेड ट्रैकर वेब के विशाल हिस्सों में दृश्यता बढ़ाते हैं। मेटा के ट्रैकिंग पिक्सल, दुनिया के लगभग एक-तिहाई लोकप्रिय वेबसाइटों पर मौजूद, अपनी प्लेटफॉर्म से परे गतिविधि की निगरानी करते हैं, अक्सर स्वास्थ्य, वित्त या राजनीतिक संदर्भों से संवेदनशील संकेतों को कैप्चर करते हैं।

इस वातावरण में एक महत्वपूर्ण एहसास उभरता है:

सामग्री काफी हद तक अनावश्यक हो जाती है। कई मामलों में, संबंधात्मक पैटर्न केवल अर्थ के प्रॉक्सी नहीं हैं — वे सामग्री से अधिक विश्लेषणात्मक रूप से उपयोगी हैं।

मेटाडेटा केवल यह इंगित नहीं करता कि संचार हुआ; यह **सामग्री का प्रायिकता पुनर्निर्माण** सक्षम बनाता है। कौन किससे संचार करता है, कब, कितनी बार और किस व्यापक संदर्भ में यह संचारित होने वाली बात को मजबूती से सीमित कर सकता है। सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी — साझा संबंध, व्यावसायिक भूमिकाएं, राजनीतिक पद, सामाजिक संबंध — संभावित व्याख्याओं के स्थान को और संकीर्ण करती है।

समय के साथ, ये बाधाएं भविष्यवाणीपूर्ण बन जाती हैं। मेटाडेटा केवल वर्णनात्मक नहीं है; यह जनरेटिव है। यह सामग्री के साथ केवल साथ नहीं चलता — बल्कि अक्सर **इसकी नकल या अनुमान** लगा सकता है, खासकर जब बड़े पैमाने पर एकत्र किया जाए।

खोज क्वेरी इरादा प्रकट करती हैं। संचार की आवृत्ति संबंध की ताकत प्रकट करती है। सह-स्थान संबंध प्रकट करता है। पर्याप्त पैमाने पर, ये संकेत अत्यधिक सटीक व्यवहारिक मॉडल में परिवर्तित हो जाते हैं जो अक्सर प्रत्यक्ष सामग्री एक्सेस को अनावश्यक बना देते हैं।

कॉर्पोरेट सिस्टम मुद्रीकरण के लिए व्यवहार को अनुकूलित करते हैं; राज्य प्रणालियां नियंत्रण के लिए इसे प्रतिबंधित करती हैं — लेकिन दोनों एक ही अंतर्निहित मशीनरी पर निर्भर हैं: **बड़े पैमाने पर व्यवहारिक अनुमान के माध्यम से भविष्यवाणी**।

IV. बचाव के बिना पहचान: स्थायी लंगर

औद्योगिक प्रोफाइलिंग की एक परिभाषित विशेषता **स्थायी पहचान** का उदय है।

पिछली प्रणालियां परिवर्तनशील पहचानकर्ताओं — नाम, दस्तावेज, पते — पर निर्भर थीं जिन्हें बदला या छिपाया जा सकता था। आधुनिक प्रणालियां ओवरलैपिंग संकेतों के माध्यम से पहचान का पुनर्निर्माण करती हैं:

- डिवाइस फिंगरप्रिंट
- व्यवहार पैटर्न
- सामाजिक ग्राफ
- बायोमेट्रिक मार्कर (चेहरा, चाल, आवाज)

सार्वजनिक रूप से साझा की गई छवियां टिकाऊ लंगर के रूप में काम करती हैं। भले ही व्यक्ति खाते बदलें या छद्मनाम अपनाएं, चेहरे की पहचान प्रणालियां — विशेष रूप से राज्य या खुफिया संदर्भों में — डेटासेट में पहचानों को फिर से जोड़ सकती हैं। फोटो या साझा घटनाओं में सह-घटना अनुमानित संबंधों को और मजबूत करती है।

निहितार्थ गहरा है:

पहचान अब वह नहीं है जो कोई घोषित करता है, बल्कि वह है जो लगातार अनुमानित की जाती है।

यह उस घर्षण को काफी हद तक समाप्त कर देता है जिसने पहले निगरानी को सीमित किया था। पहचान किसी एक संकेत पर निर्भर नहीं करती; यह कई में अतिरेक से उभरती है।

V. फ्यूजन: डेटा पॉइंट से ऑन्टोलॉजी तक

इस विकास का चरम **डेटा फ्यूजन** है: विभिन्न डेटासेट का एकीकृत विश्लेषणात्मक प्रणालियों में एकीकरण।

पैलेंटिटर टेक्नोलॉजीज जैसी प्लेटफॉर्म सरकारी रिकॉर्ड, वित्तीय लेन-देन, सोशल मीडिया गतिविधि, स्थान डेटा और संचार मेटाडेटा को व्यक्तियों और नेटवर्क के सुसंगत मॉडल में एकीकृत करती हैं। ये प्रणालियां गतिशील ऑन्टोलॉजी बनाती हैं जो विश्लेषकों को संबंधों की पूछताछ, पैटर्न का पता लगाने और भविष्यवाणियां उत्पन्न करने की अनुमति देती हैं।

एक ठोस उदाहरण परिवर्तन को दर्शाता है। आप्रवासन प्रवर्तन में, पैलेंटिटर का एन्हांस्ड लीड्स आइडेंटिफिकेशन एंड टारगेटिंग फॉर एनफोर्समेंट (ELITE) टूल संभावित लक्ष्यों से भरी मानचित्रों को भरता है, वीजा रिकॉर्ड, रोजगार डेटा, फोन मेटाडेटा, सामाजिक संबंधों और यहां तक कि मेडिकेड या एचएचएस पते की जानकारी से “पता विश्वास स्कोर” सौंपता है और डोजियर उत्पन्न करता है। अधिकारी “टारगेट-रिच” पड़ोस की पहचान कर सकते हैं, व्यक्तियों को चिह्नित कर सकते हैं न केवल प्रत्यक्ष सबूत के आधार पर बल्कि क्योंकि उनका **व्यवहारिक और संबंधात्मक हस्ताक्षर** पहले पहचाने गए मामलों से मिलता-जुलता है। इमिग्रेशनओएस जैसे टूल में समान फ्यूजन दिखाई देता है, जो यात्रा इतिहास, बायोमेट्रिक्स और सामाजिक डेटा को प्राथमिकता के लिए एकीकृत करता है।

संदेह अब खोजा नहीं जाता — वह **उत्पन्न** किया जाता है।

प्रोफाइलिंग वास्तविकता का केवल दस्तावेजीकरण नहीं करती; वह इसे सक्रिय रूप से बनाती है संभाव्य संबंधों को उजागर करके जो परिचालन रूप से कार्रवाई योग्य बन जाते हैं।

VI. व्याख्या से पूर्वनिवारण तक

पारंपरिक प्रोफाइलिंग ज्यादातर पूर्वव्यापी थी। यह पिछले कार्यों की व्याख्या करने की कोशिश करती थी — किसने अपराध किया, किसने साजिश रची, किसने खतरा पैदा किया।

औद्योगिक प्रोफाइलिंग भविष्यवाणीपूर्ण और पूर्वनिवारक है। यह पहचानती है:

- कौन अपराध कर सकता है
- अपराध कहां हो सकता है
- कौन डिफॉल्ट कर सकता है, कट्टर बन सकता है या विचलित हो सकता है

इस तर्क की अक्सर **माइनॉरिटी रिपोर्ट** में चित्रित दृष्टि से तुलना की जाती है, जहां व्यक्तियों को अपराध करने से पहले पकड़ लिया जाता है। जबकि समकालीन प्रणालियां निर्णायक दूरदृष्टि की कमी रखती हैं, संरचनात्मक समानता स्पष्ट है:

भविष्यवाणीपूर्ण पुलिसिंग टूल ऐतिहासिक डेटा, 911 कॉल, लाइसेंस-प्लेट रीडर और सामाजिक संकेतों का विश्लेषण करके “हीट लिस्ट” या जोखिम स्कोर उत्पन्न करते हैं।

आधुनिक प्रणालियां प्रायिकता पर काम करती हैं। व्यक्तियों को चिह्नित किया जाता है न इसलिए कि वे कार्य करेंगे, बल्कि इसलिए कि वे **सांख्यिकीय रूप से उन दूसरों से मिलते-जुलते हैं जिन्होंने किया है।**

बदलाव सूक्ष्म लेकिन गहरा है:

व्यक्तियों का मूल्यांकन अब मुख्य रूप से उनके कार्यों पर नहीं, बल्कि प्रायिकता वाले परिदृश्य में उनकी स्थिति पर किया जाता है।

संदेह संरचनात्मक बन जाता है — निरंतर उत्पन्न होता है बजाय अलग घटनाओं द्वारा ट्रिगर होने के।

VII. अनुमान के युग में कानून

जनरल डेटा प्रोटेक्शन रेगुलेशन जैसे कानूनी ढांचे सहमति, पारदर्शिता और न्यूनीकरण के माध्यम से सीमाएं लगाने की कोशिश करते हैं। फिर भी वे संरचनात्मक बाधाओं का सामना करते हैं।

अधिकांश कानूनी प्रणालियां **डेटा को एक वस्तु** के रूप में नियंत्रित करती हैं। आधुनिक प्रोफाइलिंग अपनी शक्ति **संबंधों और अनुमानों** से प्राप्त करती है, जिन्हें परिभाषित, अवलोकन या प्रतिबंधित करना बहुत कठिन है।

अतिरिक्त चुनौतियां शामिल हैं:

- क्षेत्राधिकारों में निरंतर डेटा प्रवाह
- राष्ट्रीय सुरक्षा और “वैध हितों” के लिए व्यापक अपवाद
- निरीक्षण के प्रति प्रतिरोधी अपारदर्शी एल्गोरिदमिक सिस्टम

परिणाम एक लगातार बेमेल है:

रिकॉर्ड के युग के लिए डिजाइन किए गए कानूनी ढांचे निरंतर, भविष्यवाणीपूर्ण अनुमान के युग को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष करते हैं।

VIII. शक्ति का असममितता

औद्योगिक प्रोफाइलिंग एक संरचनात्मक असंतुलन पैदा करती है।

आधुनिक जीवन में भागीदारी के माध्यम से व्यक्ति लगातार डेटा उत्पन्न करते हैं। बचाव संभव है लेकिन महंगा और अपूर्ण। वहीं:

- निगम अपारदर्शी सिस्टम को गोपनीयता द्वारा संरक्षित रखते हैं
- राज्य कानूनी प्राधिकार या साझेदारियों के माध्यम से डेटा तक पहुंच और एकीकरण करते हैं
- तकनीकी जटिलता जवाबदेही को अस्पष्ट करती है

परिणाम स्पष्ट असममितता है:

कई को समझने योग्य बना दिया जाता है; शक्तिशाली तुलनात्मक रूप से अपारदर्शी रहते हैं।

IX. आंतरिककरण: प्रोफाइलिंग और व्यवहार का स्व-नियमन

अपने संस्थागत और तकनीकी आयामों से परे, प्रोफाइलिंग का औद्योगीकरण एक गहरा मनोवैज्ञानिक परिवर्तन पैदा करता है। निगरानी अब केवल बाहरी बल के रूप में काम नहीं करती; वह आंतरिक हो जाती है।

मिशेल फूको ने पैनोप्टिकॉन के अपने विश्लेषण में इस गतिशीलता की पूर्वानुमान लगाया था: जेरेमी बेंथम द्वारा एक सैद्धांतिक जेल डिजाइन जिसमें कैदी एक केंद्रीय पर्यवेक्षक को देख सकते हैं जिसे वे नहीं देख सकते, वे अनुशासन को आंतरिक बनाते हैं और निरंतर देखे जाने की अनिश्चितता के तहत अपना व्यवहार स्वयं नियंत्रित करते हैं। पैनोप्टिकॉन की शक्ति निरंतर अवलोकन में नहीं बल्कि उसके **अपेक्षा** में है।

औद्योगिक प्रोफाइलिंग इस तर्क को नाटकीय रूप से विस्तारित करती है। व्यक्ति ऐसे वातावरण में काम करते हैं जहां उनके कार्य रिकॉर्ड, विश्लेषित और अपारदर्शी तरीकों से व्याख्या किए जा सकते हैं — जुड़ाव को अनुकूलित करने वाली प्लेटफॉर्म द्वारा या जोखिम का मूल्यांकन करने वाले राज्यों द्वारा। परिणाम **स्व-नियमन** की ओर बदलाव है।

यह इस रूप में प्रकट होता है:

- पोस्ट, खोजों या संबंधों में स्व-संरक्षण
- कुछ समूहों, विषयों या स्थानों से बचाव
- जोखिम स्कोर को कम करने के लिए कथित मानदंडों के साथ संरक्षण
- डिजिटल और भौतिक संदर्भों में व्यवहार का संशोधन

महत्वपूर्ण रूप से, इन अनुकूलनों के लिए स्पष्ट जबरदस्ती की आवश्यकता नहीं है। वे अपेक्षा से उत्पन्न होते हैं।

नियंत्रण केवल उन चीजों के माध्यम से नहीं बल्कि उन चीजों के माध्यम से भी प्रयोग किया जाता है जिन्हें व्यक्ति करने से बचते हैं।

प्रभाव व्यक्तियों से परे फैलते हैं। जैसे-जैसे लोग स्व-संरक्षण करते हैं और स्व-छांटते हैं, उत्पन्न डेटा पैटर्न को मजबूत करता है, भविष्य की भविष्यवाणियों को आकार देता है। प्रणाली केवल वास्तविकता का निरीक्षण नहीं करती — वह इसे सूक्ष्म रूप से पुनर्निर्मित करती है, अनुरूपता को सामान्य बनाने वाली फीडबैक लूप पैदा करती है।

X. चयनात्मक निगरानी का अंत

प्रोफाइलिंग एक मौलिक परिवर्तन से गुजरी है:

- लक्षित से सार्वभौमिक तक
- मैनुअल से स्वचालित तक
- पूर्वव्यापी से भविष्यवाणीपूर्ण तक
- विखंडित से एकीकृत तक

पिछली प्रणालियां घर्षण द्वारा सीमित थीं — लागत, समय, मानवीय ध्यान। औद्योगिक प्रणालियां इन बाधाओं को हटा देती हैं। निगरानी परिवेशीय बन जाती है। समावेश डिफ़ॉल्ट बन जाता है।

यह सिद्धांत कि डेटा को केवल अपने तत्काल उद्देश्य की सेवा करनी चाहिए, उस प्रतिमान के लिए रास्ता दे देता है जिसमें सभी डेटा संभावित रूप से शोषण योग्य है।

XI. निष्कर्ष: भागीदारी की कीमत

पत्र गोपनीयता से डिजिटल डेटा फ्यूजन तक का लंबा चाप एक सुसंगत पैटर्न प्रकट करता है: प्रत्येक तकनीकी विस्तार प्रोफाइलिंग के दायरे को बढ़ाता है, जबकि कानूनी और सामाजिक प्रतिक्रियाएं पीछे रह जाती हैं। वर्तमान को जो अलग करता है वह संरचनात्मक है। प्रोफाइलिंग अब विशिष्ट व्यक्तियों पर निर्देशित गतिविधि नहीं है — यह वह बुनियादी ढांचा है जिसमें व्यक्ति मौजूद हैं।

“रुचि वाले व्यक्ति” की श्रेणी घुल-मिल जाती है। हर कोई निरंतर मूल्यांकन का विषय बन जाता है।

यह परिवर्तन केवल राज्य शक्ति द्वारा नहीं बल्कि आर्थिक प्रोत्साहनों द्वारा भी बनाए रखा जाता है। जो प्लेटफॉर्म मुफ्त लगती हैं वे व्यावहारिक डेटा निष्कर्षण के माध्यम से काम करती हैं। वाक्यांश “**अगर आप उत्पाद के लिए भुगतान नहीं कर रहे हैं, तो आप ही उत्पाद हैं**” एक अंतर्ज्ञान को पकड़ता है — लेकिन वास्तविकता को कम आंकता है।

जो उत्पन्न होता है वह व्यक्ति नहीं, बल्कि व्यक्ति का **भविष्यवाणीपूर्ण मॉडल** है — पोर्टेबल, कार्रवाई योग्य और अक्सर उस व्यक्ति के लिए दुर्गम जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है।

एक केंद्रीय चुनौती धारणा और वास्तविकता के बीच की खाई में है।

पहले, लोग जो जाना जाता है उसके **प्रभाव** को कम आंकते हैं। प्रोफाइलिंग संबंध के माध्यम से काम करती है। संबंध — पिछले, कमजोर या अप्रत्यक्ष — परिणामों को आकार दे सकते हैं। जो व्यक्ति बाद में अवांछनीय बन जाता है उसके साथ संबंध अवसरों को प्रभावित कर सकता है। किसी का मूल्यांकन केवल व्यक्तिगत रूप से नहीं बल्कि संबंधात्मक रूप से किया जाता है।

दूसरे, लोग जो जाना जा सकता है उसके **दायरे** को कम आंकते हैं। प्रणालियां संवेदनशील विशेषताओं — राजनीतिक, धार्मिक, यौनिक, आर्थिक — का अनुमान स्पष्ट खुलासे से नहीं बल्कि पैटर्न से लगाती हैं। ये अनुमान सटीकता की परवाह किए बिना परिचालन बन जाते हैं।

व्यक्तियों का मूल्यांकन न केवल उनके द्वारा प्रकट की गई बातों पर किया जाता है, बल्कि जो अनुमानित किया जा सकता है — और वे किससे जुड़े हैं — पर भी किया जाता है।

डिजिटल जीवन में भागीदारी इस प्रकार एक अंतर्निहित आदान-प्रदान है: सुविधा के बदले में समझ। यह आदान-प्रदान न तो पारदर्शी है और न ही बातचीत योग्य।

चुनौती डेटाफिकेशन को रोकना नहीं है, बल्कि इसे सीमित करना है — घर्षण बहाल करना, सीमाएं लागू करना और जवाबदेही सुनिश्चित करना।

केंद्रीय प्रश्न स्पष्ट है:

क्या हस्तक्षेप तब होगा जब स्थायी प्रोफाइलिंग की बुनियादी ढांचा इतना गहराई से अंतर्निहित हो जाए कि उसे सार्थक रूप से चुनौती देना मुश्किल हो जाए?

ऐसे हस्तक्षेप के अभाव में, भागीदारी की कीमत केवल डेटा नहीं होगी — बल्कि देखे जाने, अनुमानित होने और अंततः परिभाषित होने के बीच की सीमा का क्रमिक क्षरण होगा।